MERIKHETI

मेरीखेती

सितम्बर, 2024 । मूल्य : रु49

- खेत खलियान
- बागवानी फसलें
- मशीनरी
- पशुपालन–पशुचारा
- औषधीय खेती
- प्रगतिशील किसानं

www.merikheti.com | YouTube

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 05
बागवानी फसलें	06 - 13
मशीनरी	13 - 21
पशुपालन–पशुचारा	22 - 23
औषधीय खेती	24 - 26
प्रगतिशील किसानं	27

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

कृषि में महिलाओं की भूमिका

भारत में कृषि में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण और व्यापक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, और वे खेती से जुड़े विभिन्न चरणों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। उनकी भूमिका विविध और व्यापक है, जो निम्नलिखित बिंदुओं में समझी जा सकती है:

1. खेती के कामकाज में भागीदारी:

– महिलाएं बुवाई, निराई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई, और फसल की सफाई जैसे कृषि कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।

– वे बीज तैयार करने, खाद डालने, और कीट नियंत्रण जैसे कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. फसल प्रबंधन:

– महिलाएं फसल की देखभाल, जैसे समय पर सिंचाई, खरपतवार नियंत्रण, और कीटों से फसल की सुरक्षा में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

– वे फसल कटाई के बाद भंडारण और प्रसंस्करण में भी सक्रिय होती हैं, जैसे अनाज की सफाई, सुखाई, और पैकिंग।

3. पशुपालन और डेयरी प्रबंधन:

– ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं पशुपालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे मवेशियों की देखभाल, दूध निकालने, और डेयरी उत्पाद तैयार करने में सक्रिय होती हैं।

– पशुओं के स्वास्थ्य, उनके भोजन की व्यवस्था, और डेयरी उत्पादों का विपणन भी अक्सर महिलाओं के द्वारा किया जाता है।

4. बागवानी और उद्यानिकी:

– महिलाएं बागवानी में फल, सब्जियों, और फूलों की खेती में भी शामिल होती हैं। वे इन फसलों की देखभाल और बाजार में उनकी बिक्री का काम करती हैं।

– छोटे उद्यान और घरेलू बागवानी में भी महिलाएं सक्रिय होती हैं, जहां वे परिवार के लिए ताजे उत्पाद उगाती हैं।

5. समाज में बदलाव की आवश्यकता:

– महिलाओं के कृषि में योगदान को मान्यता देने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए नीतिगत और सामा जिक स्तर पर बदलाव की आवश्यकता है।

– उन्हें कृषि प्रशिक्षण, वित्तीय संसाधन, और तकनीकी सहायता प्रदान की जानी चाहिए, ताकि वे और अधिक प्रभावी ढंग से कृषि में योगदान दे सकें।

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

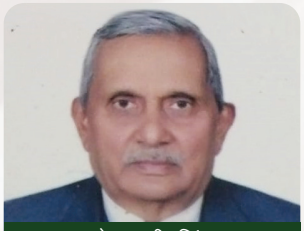

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

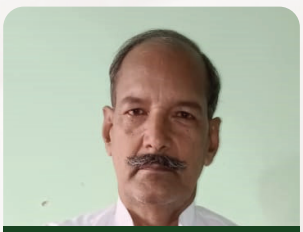

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

गन्ने का लाल सड़न रोग: लक्षण, पहचान और प्रभावी रोकथाम के उपाय

गन्ना हमारे देश की एक महत्वपूर्ण औद्योगिक नगदी फसल है। यह गुड़ और शक्कर उत्पादन का प्रमुख स्रोत है, भारत विश्व में दूसरे स्थान पर गन्ने का उत्पादन करता है। फिर भी, प्रति हेक्टेयर गन्ने की उपज अपेक्षाकृत कम है। इसके कई कारणों में प्रमुख कारण गन्ने के रोग हैं, जिनसे उत्पादन, गुड़ और शक्कर की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इनमें सबसे खतरनाक रोग लाल सड़न है, जिसे गन्ने का कैंसर भी कहा जाता है। इसे अंग्रेजी में Red Rot of Sugarcane के नाम से जाना जाता है। आइए इस रोग के लक्षण और नियंत्रण के उपायों को विस्तार से समझते हैं।

लाल सड़न रोग के लक्षण

लाल सड़न मुख्य रूप से खड़ी फसलों को प्रभावित करता है, जो अप्रैल से जून के दौरान अंकुरण के समय और उसके बाद फसल को नष्ट कर सकता है। मानसून के दौरान या उसके बाद गन्ने की फसल में यह रोग दिखाई देता है। इसके प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं:

- **निचली पत्तियों का सूखना:** सबसे पहले निचली पत्तियों के सिरे और किनारे सूखने लगते हैं। कुछ दिनों बाद पूरी पत्ती सूख जाती है, और डंठल का रंग बैंगनी हो जाता है।
- **डंठल के आंतरिक ऊतक लाल हो जाते हैं:** डंठल के आंतरिक ऊतकों का लाल रंग मुख्य लक्षण है, जो सफेद अनुप्रस्थ धारियों से बाधित होते हैं। प्रभावित ऊतकों से एक विशेष प्रकार की मादक गंध उत्पन्न होती है, जो इस रोग का विशिष्ट संकेत है।
- **डंठल का खोखला होना:** कुछ समय बाद डंठल खोखले हो जाते हैं, और अंदरूनी ऊतक सूखकर सिकुड़ जाते हैं। इनमें कवक मायसेलियम भर जाते हैं, जिससे डंठल की संरचना कमजोर हो जाती है।
- **पत्तियों पर लाल धब्बे:** कवक के कारण पत्तियों पर लाल रंग के लंबे घाव और धब्बे उत्पन्न होते हैं। गंभीर संक्रमण के मामलों में पत्तियों पर छोटे–छोटे लाल–भूरे धब्बे भी दिखाई देते हैं।
- **काले बीजाणु और चाबुक जैसी संरचना:** डंठल के शीर्ष पर काले चाबुक जैसी संरचना उत्पन्न होती है। प्रारंभिक अवस्था में यह सफेद झिल्ली से ढकी रहती है, जो परिपक्व होने पर फट जाती है और काले बीजाणु बाहर निकल आते हैं।

लाल सड़न रोग की पहचान

मौसम के अंत में शीर्ष पत्तियों के पीले पड़ने और मुरझाने से इस रोग की पहचान होती है। गन्ने तेजी से सूखने लगते हैं और हल्के तथा खोखले हो जाते हैं। विभाजित करने पर, नोड्स पर लाल धारियाँ दिखाई देती हैं, और प्रभावित ऊतक से विशेष मादक गंध निकलती है।

रोग की रोकथाम के उपाय

- गन्ने को शारीरिक क्षति से बचाना चाहिए, क्योंकि यांत्रिक क्षति से रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है।
- संक्रमित डंठलों को तुरंत हटा देना चाहिए, ताकि रोग आगे न फैले।
- त्मक त्वज वि नहंतबंदम से बचाव के लिए रोग प्रति. रोधी किस्मों का रोपण करना चाहिए।
- खेत की सफाई और उचित जल निकासी सुनिश्चित करनी चाहिए, जिससे नमी के कारण रोग फैलने की संभावना कम हो।
- फफूंदनाशी का छिड़काव और जैविक उपचार का उपयोग रोग नियंत्रण में सहायक हो सकता है।

- रोग की रोकथाम के लिए रोपण से पहले कार्बेन्डाजिम के साथ सेट उपचार अपनाएं (Carbendazim 50 WP (0.5 ग्राम 1 लीटर पानी में) या Carbendazim 25 DS (1 ग्राम 1 लीटर पानी में) के साथ 2.5 किलोग्राम यूरिया को 250 लीटर पानी में मिलाकर इस्तेमाल करें।
- फफूंदरोधी रसायनों जैसे बाविस्टिन, बेनोमाइल, टॉप्सिन और एरेटन का 0.1 प्रतिशत घोल 52ºC पर 18 मिनट के लिए सेट्स को डुबाने के लिए उपयोग करें, जो लाल सड़न संक्रमण को लगभग पूरी तरह समाप्त कर देता है।

गन्ने के लाल सड़न रोग को समय रहते पहचानकर रोकथाम के उपयुक्त उपाय अपनाने से किसानों को इस रोग के कारण होने वाले भारी नुकसान से बचाया जा सकता है, जिससे फसल की उपज और गुणवत्ता में सुधार होगा।

धान के ये 2 प्रमुख रोग है बहुत घातक, समय पर करें इनका उपचार

भारत में धान खाद्य फसलों में से एक प्रमुख फसल है। भारत चावल उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। भारत में लगभग 450 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में धान की खेती की जाती है। लेकिन अच्छी धान की पैदावार के लिए फसल को रोग से बचाना भी बहुत महत्वपूर्ण है। आज हम किसानों को धान की फसल में लगने वाले रोगों, उनके प्रबंधन और लक्षणों की जानकारी देंगे। ताकि किसान इन रोगों को समय रहते पहचान कर पैदावार और आय दोनों में वृद्धि कर सकें।

1. धान का प्रध्वंस रोग

ये धान का बहुत घातक रोग हैं, इस रोग के लक्षण पत्तियों पर ज्यादा दिखाई देते हैं।

रोग के लक्षण

मुख्यत पत्तियों पर दिखाई देते हैं, लेकिन यह पर्णच्छद, पुष्पगुच्छ, गाठों और दानों के छिलकों पर भी आक्रमण कर सकता है। कवक का संक्रमण पत्तियों, गाठों और ग्रीवा पर अधिक होता है। पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं, जो आँख या नाव के आकार के होते हैं और बाद में स्लेटी रंग में बदल जाते हैं। इन धब्बों के बीच में एक पतली पट्टी दिखाई देती है। जब वातावरण अनुकूल होता है, तो ये धब्बे बड़े होकर आपस में मिल जाते हैं, जिससे पत्तियां झुलस कर सूख जाती हैं। गाँठ प्रध्वंस में, संक्रमित गाँठ काली होकर टूट जाती हैं। दौजी की गाँठों पर कवक के आक्रमण से भूरे रंग के धब्बे बनते हैं, जो गाँठ को चारों ओर से घेर लेते हैं।

ग्रीवा ब्लास्ट में, पुष्पगुच्छ के आधार पर भूरे से काले रंग के धब्बे बनते हैं, जो चारों ओर फैल जाते हैं और पुष्पगुच्छ वहां से टूट कर गिर जाता है, जिससे दानों की पूरी तरह से हानि होती है। अगर पुष्पगुच्छ के निचले डंठल में रोग का संक्रमण होता है, तो बालियों में दाने नहीं बनते और पुष्प और ग्रीवा काले रंग की हो जाती हैं।

रोग की रोकथम कैसे करें?

- बीजों को स्यूडोमोनास फ्लोरेसन्स जैसे जैविक पदार्थों से उपचारित करके 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुआई करें।
- 2 ग्राम कार्बेडाजिम 50 WP या 5 ग्राम नटिवो 75 WG (टेबुकोनाजोल . ट्राइफ्लोक्सिस्ट्रोबिन) प्रति लीटर पानी में घोलकर फफूंदनाशक का छिड़काव करें।
- रोग प्रतिरोधी किस्में जैसे पूसा बासमती 1609, पूसा बासमती 1885, पूसा 1612, पूसा साबा 1850, और पूसा बासमती 1637 उगाएं।

- यदि खेत में रोग के लक्षण दिखाई दें, तो नाइट्रोजन उर्वरक का प्रयोग न करें।
- फसल की बुआई गीली पौधशाला में करें।
- फसल स्वच्छता बनाए रखें, सिंचाई की नालियों को घास रहित रखें, और फसल चक्र जैसे उपाय अपनाएं।

2. धान का बकाने रोग

बकाने रोग के विभिन्न प्रकार के लक्षण होते हैं, जो बुवाई से लेकर कटाई तक देखे जा सकते हैं।

रोग के लक्षण

प्रारंभिक लक्षणों में, प्राथमिक पत्तियाँ दुर्बल, हरिमाहीन, और असामान्य रूप से लंबी हो जाती हैं। हालांकि, सभी संक्रमित पौधे इस प्रकार के लक्षण नहीं दिखातेय कुछ संक्रमित पौधों में क्राउन विगलन देखा गया है, जिसके कारण धान के पौधे छोटे या बौने रह जाते हैं। फसल के परिपक्वता के करीब पहुँचने पर, संक्रमित पौधे सामान्य स्तर से काफी ऊपर निकल जाते हैं और हल्के हरे रंग के ध्वज–पत्र वाली लंबी दौजियाँ दिखाते हैं। संक्रमित पौधों में दौजियों की संख्या कम होती है और कुछ हफ्तों में, नीचे से ऊपर की ओर सभी पत्तियाँ सूख जाती हैं। कभी–कभी संक्रमित पौधे परिपक्वता तक जीवित रहते हैं, लेकिन उनकी बालियाँ खाली रह जाती हैं। संक्रमित पौधों के निचले हिस्सों पर सफेद या गुलाबी कवक जाल भी देखा जा सकता है।

रोग की रोकथम कैसे करें?

- रोग को कम करने के लिए, साफ–सुथरे और रोगमुक्त बीजों का उपयोग करना चाहिए, जिन्हें विश्वसनीय बीज उत्पादकों या अन्य विश्वसनीय स्रोतों से खरीदा जाए।
- बोए जाने वाले बीजों से हल्के और संक्रमित बीजों को अलग करने के लिए 10 प्रतिशत नमक पानी का उपयोग किया जा सकता है, ताकि बीजजन्य रोग को कम किया जा सके।
- कार्बेडाजिम 50 डब्ल्यू पी का 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार उपयोगी है।
- रोपाई के समय 1 ग्रामध्लीटर पानी की दर से कार्बेडाजिम (बाविस्टीन 50 डब्ल्यू पी) में 12 घंटे के लिए पौधों को उपचारित करें।
- खेत को साफ–सुथरा रखें और कटाई के बाद धान के अवशेषों और खरपतवार को खेत में न रहने दें।

धान की फसल को बौनेपन से बचने के लिए किसान करें ये काम, होगा अच्छा उत्पादन

भारत में खरीफ फसलों का समय चल रहा है, और धान इस सीजन की प्रमुख फसल है। इस समय किसानों को कम लागत में धान की अच्छी पैदावार करने के लिए कृषि विभाग और कृषि विश्वविद्यालयों से निरंतर सलाह दी जा रही है। इसी संदर्भ में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं। ये सलाह किसानों को धान की फसल को बौनेपन से बचाने के लिए दी गई है। विश्वविद्यालय की सलाह में बताया गया है कि चावल की नर्सरी में स्पाइनारियोविरिडे समूह के वायरस की उपस्थिति कई जगहों पर देखी गई है।

इस वायरस से संक्रमित पौधे छोटे और अधिक हरे दिखाई देते हैं। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि वर्तमान में संक्रमण बहुत कम है। इसलिए, किसानों को सुझाव दिया गया है कि वे समय रहते संक्रमण को रोकने के लिए उचित कदम उठाएं ताकि फसल को नुकसान से बचाया जा सके।

धान की फसल को बौनेपन से बचाने के उपाय

वैज्ञानिक डॉ. विनोद कुमार मलिक ने सुझाव दिया कि शुरुआती नर्सरी की बुआई पर ध्यान दिया जाना चाहिए और संक्रमित पौधों को उखाड़कर नष्ट करना चाहिए या उन्हें खेत से दूर मिट्टी में दबा देना चाहिए। असमान विकास पैटर्न दिखाने वाले नर्सरी पौधों को प्रत्यारोपण न करें। हॉपर्स से नर्सरी की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें। इसके लिए, डिनोटफ्यूरान 20 एसजी 80 ग्राम या पाइमेट्रो. जिन 50 डब्ल्यूजी 120 ग्राम प्रति एकड़ (या 10 ग्राम या 15 ग्राम प्रति कनाल) नर्सरी क्षेत्र में छिड़काव करें। ध्यान देने योग्य बात ये है कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2022 में पहली बार धान की फसल में एक अज्ञात बीमारी की सूचना दी थी, जिससे राज्य के धान उगाने वाले क्षेत्रों में पौधे बौने हो गए थे। इस बीमारी से सभी प्रकार की चावल किस्में प्रभावित हुई थीं।

सरसों की फसल में भयानक खरपतवार ओरोबंकी के नियंत्रण उपाय

ओरोबंकी, जिसे मरगोजा भी कहा जाता है, सरसों का एक खतरनाक खरपतवार है जो उत्पादन को 45 प्रतिशत तक कम कर सकता है। यह पूरी तरह से सरसों की जड़ पर निर्भर होता है, और जड़ से सभी पोषक तत्वों को सोख लेता है। इससे फसल की उपज में भारी गिरावट हो सकती है, जैसे जहां 10 क्विंटल की उपज होनी थी, वहां 3 क्विंटल तक कम हो जाती है।

ओरोबंकी खरपतवार कैसे फलता है?

ओरोबंकी का प्रसार बीज द्वारा होता है, और यह प्रति पौधा 1 से 5 लाख तक बीज बना सकता है। इसके बीज इतने छोटे होते हैं कि उन्हें आंखों से देख पाना मुश्किल होता है। ये बीज मिट्टी में 10–15 साल तक निष्क्रिय रह सकते हैं, लेकिन उगने की क्षमता बनाए रखते हैं।

बुवाई के कितने दिन बाद उगता है ये खरपतवार?

सरसों की बुवाई के 6 दिन बाद यह खरपतवार उगना शुरू हो जाता है। सरसों की जड़ें एक रसायन छोड़ती हैं जिससे आसपास के ओरोबंकी के बीज उग जाते हैं। उगने के बाद यह सरसों की जड़ों से जुड़कर पोषक तत्व सोखना शुरू करता है। बुवाई के 45–60 दिन तक ओरोबंकी मिट्टी के अंदर ही रहता है और फिर बाहर निकलकर 8–10 दिनों में फूल बनाता है और बीज तैयार करता है।

ओरोबंकी खरपतवार नियंत्रण के उपाय

- इस खरपतवार के नियंत्रण के लिए बुवाई के 30 दिन बाद राउंड अप या ग्लाइसल 25 ग्राम को 150 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- दूसरा छिड़काव 50–55 दिन बाद 50 ग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से करें। छिड़काव से पहले या बाद में सिंचाई करना आवश्यक है।
- इसके प्रकोप को कम करने के लिए गर्मियों में प्रभा. वित खेतों की 9–10 सेंटीमीटर गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।
- ध्यान दें कि अभी तक कोई ऐसी सरसों की किस्म उपलब्ध नहीं है जो ओरोबंकी से प्रतिरोधक हो। बुवाई के समय स्वस्थ और प्रमाणित बीज का उपयोग करें जिसमें ओरोबंकी के बीज न हों।
- सरसों की फसल को उर्वरकों से पोषण देकर ओरोबंकी के प्रभाव को कम किया जा सकता है। पहले पानी के समय 50 किलो यूरिया और दूसरे पानी के समय 25 किलो यूरिया का उपयोग करें। यदि खेत में ओरोबंकी का प्रकोप अधिक हो तो सरसों के बजाय चना, जौ या गेहूं की बुवाई करें।
- समय पर सिंचाई करके भी ओरोबंकी को नियंत्रित किया जा सकता है क्योंकि यह खरपतवार अधिक नमी सहन नहीं कर पाता।

गन्ने की खेती से अच्छा उत्पादन पाने के लिए इन बातों का पालन करें

किसान भाइयों खरीफ का सीजन शुरू हो गया है और गन्ना खरीफ सीजन की प्रमुख नकदी फसल है। देश की बड़ी किसान आबादी गन्ने की खेती से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तौर पर गन्ने की खेती से जुड़ी हुई है। इसलिए आज हम खरीफ सीजन में किए जाने वाले उन कार्यों की चर्चा करेंगे, जिनसे गन्ने की फसल का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने में सहयोग मिलता है। सबसे पहले गन्ने की फसल को झुकने या गिरने से बचाने के लिए अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में इसकी एक बंधाई करनी चाहिए। इसके लिए प्रत्येक कतार के प्रत्येक झुंड को उसकी सूखी पत्ती से बीच में बंधाई करनी चाहिए। ऐसे खेत जिनमें हरी खाद के लिए ढेंचा या सनई की बुवाई की गई हो उनमें 45 से 60 दिन के समयांतराल में खेत में पाटा चलाकर दबा देना चाहिए व मृदा पलटने वाले हल से उसको पलट देना चाहिए।

गन्ने की फसल में खाद यूरिया का ख्याल

शानदार नतीजे हांसिल करने के लिए अगर ढेंचा या सनई में बीते समय सुपर फास्फेट न दिया गया हो तो 40 से 60 किलोग्राम फास्फेट प्रति हैक्टेयर की दर से फसल पलटने के बाद इसे देना चाहिए।

गन्ने की फसल से भरपूर लाभ प्राप्त करने के लिए 5: प्रतिशत यूरिया पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। छिड़काव के एक दिन के अंदर बारिश हो जाने से यूरिया का प्रभाव काफी कम हो जाता है।

गन्ने के खेत में उचित जल निकासी की व्यवस्था

बारिश के समय में यदि खेत में पानी भर गया हो तो उसकी निकासी की व्यवस्था जरूर करनी चाहिए। यह देखा जाता है, कि गन्ने के खेत में खरपतवारों में मुख्य रूप से बेले पनप कर गन्ने के पौधों को लपेटकर चढ़ती हैं। इससे गन्ने की बढ़वार पर काफी दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में इन बेल रूपी खरपतवारों को हटाकर खेत से बाहर कहीं दूर फेंक देना चाहिए।

गन्ने की अच्छी किस्म का चयन करना बहुत जरूरी

देश के पूर्वी भाग में मध्य सितंबर से गन्ने की बुवाई का कार्य शुरू हो जाता है। ऐसे में किसान को अभी से अपने खेतों में बुवाई के लिए पौधशालाओं में गन्ने की विभिन्न जातियों का चयन कर लेना चाहिए और बीज का गन्ना प्राप्त करने की व्यवस्था करनी चाहिए। सितंबर महीने में सामान्य तौर पर कुंडवा, काना, विवर्ण, लालधारी, पोक्का रोग, गूदे की सड़न रोग भी गन्ने को चपेट में ले लेते हैं।

किसान को फसल की निगरानी करते रहना आवश्यक

ऐसे में समय–समय पर फसल का निरीक्षण करते रहना चाहिए। अगर रोग प्रकोप दिखाई दे तो उसकी रोकथ. ाम के उपाय करने चाहिए। इस माह में गन्ने की फसल में अंकुरबोधक, गुरूदासपुर बेधक, चोटीबेधक, काला चिकटा, सफेद कीट, पायरिला का संक्रमण नजर आता है, तो ऐसे में फसल का जरूर निरीक्षण करें। यदि गन्ने की फसल में आपको किसी रोग का लक्षण नजर आए तो उसकी रोकथाम के अतिशीघ्र उपाय करने अत्यंत जरूरी हैं।

पडलिंग का मास्टर ब्लास्टर
श्रेष्ठ पडलिंग मास्टर
इसके विशेष डिज़ाइन से मिले गीली मिट्टी में भी बेहतरीन ग्रिप
JK TYRE
TOTAL CONTROL
*STANDARD
7
YEARS
WARRANTY
मज़बूत टाई-बार
बेहतर लग स्पेसिंग
और ज़्यादा गहरा ट्रेड
नई तकनीक से बना
Mud Shaker
SHRESTH
JK TYRE
उपलब्ध साइज़:
13.6 - 28 | 14.9 - 28
#9.50 - 20 | 16.9 - 28
#Coming soon.
*T&C apply.

चीकू की खेती कैसे की जाती है: उपयुक्त किस्में और उपज बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण टिप्स

चीकू, जिसे सपोटा भी कहा जाता है, एक उष्णकटिबंधीय फल है जिसका वैज्ञानिक नाम Manilkara zapota है। यह फल भारत, मैक्सिको, थाईलैंड और अन्य उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से उगाया जाता है। चीकू के पेड़ सदाबहार होते हैं और इसके फल गोलाकार या अंडाकार होते हैं, जिनकी बाहरी सतह खुरदरी और भूरे रंग की होती है। फल का गूदा मुलायम, मीठा, और हल्का दानेदार होता है, जिसमें एक विशेष सुगंध होती है। चीकू की खेती विशेष रूप से गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी होती है। यह पेड़ गर्मियों में अच्छे से फल देता है और थोड़ी बहुत सूखी परिस्थितियों को भी सहन कर सकता है। चीकू के पेड़ की गहराई तक जाने वाली जड़ें इसे जल की कमी के बावजूद फलने में मदद करती हैं।

मिट्टी और जलवायु की आवश्यकताएं

चीकू की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटि. बंधीय जलवायु उपयुक्त होती है। चीकू के पेड़ को गर्म और आर्द्र मौसम की आवश्यकता होती है (10°C से 38°C के बीच)। सूखे की परिस्थितियों में भी यह पेड़ सहनशील होता है।

चीकू की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। मिट्टी की जल निकासी अच्छी होनी चाहिए। इसकी खेती के लिए मिट्टी में अच्छी उपजाऊ शक्ति होनी चाहिए जिससे की पौधे और फलों का विकास अच्छे से हो सकें।

किस्मों का चयन

- **क्रिकेट बॉल:** जिसे कलकत्ता लार्ज भी कहा जाता है, इसके फल बड़े और गोल होते हैं, गूदा खुरदुरा, दानेदार और मध्यम रूप से मीठा होता है। यह किस्म शुष्क और आर्द्र दोनों जलवायु में अच्छी तरह से प्रदर्शन करती है।
- **कालीपट्टी:** यह महाराष्ट्र, गुजरात और उत्तरी कर्नाटक की प्रमुख किस्म है। इसके फल अंडाकार होते हैं, बीज कम होते हैं, और इसका गूदा मीठा, कोमल और उत्कृष्ट गुणवत्ता का होता है, जिसमें हल्का स्वाद होता है।
- **पीकेएम–1:** गुठी किस्म से क्लोनल चयन की गई है, यह बौनी पेड़ वाली किस्म है, जो तमिलनाडु में लोकप्रिय है, पतली त्वचा और मक्खन जैसे बेहद मीठे गूदे के साथ।
- **डीएचएस–1:** कालीपट्टी और क्रिकेट बॉल के बीच एक संकर किस्म है। पेड़ मजबूत होते हैं, गोल से लेकर थोड़े अंडाकार फल होते हैं, और बहुत मीठे, नरम, दानेदार और कोमल गूदे के साथ होते हैं।
- **डीएचएस–2:** कालीपट्टी और क्रिकेट बॉल के बीच की एक संकर किस्म है। यह अधिक उपज देने वाली किस्म है, जो क्रिकेट बॉल और कालीपट्टी से 25 से 30% अधिक उपज देती है, और इसमें बहुत मीठा, नरम, दानेदार और कोमल हल्का नारंगी–भूरे रंग का गूदा होता है।
- **अन्य किस्में:** सीओ 1, सीओ 2 और सीओ 3, पीकेएम 2 और 3, पाला, कीर्तिभारती, बारामासी और द्वारपूड़ी।

पौधा रोपण

मानसून की शुरुआत में पौधारोपण सामान्यत किया जाता है और इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कलम जोड़ जमीन के स्तर से कम से कम 15 से.मी. ऊपर हो।

पौधारोपण के बाद, जड़ों के चारों ओर की मिट्टी को अच्छी तरह से दबा देना चाहिए और कलम को दो मजबूत खूंटों और एक रस्सी का उपयोग करके बांधना चाहिए। कलमों को पौधों और पंक्तियों के बीच 7–8 मीटर की दूरी पर लगाना चाहिए। पौधों को ठीक से 3–4 वर्षों तक प्रशिक्षित करना चाहिए। सबसे निचली शाखाओं को जमीन से 60 से.मी. से 1 मीटर की ऊंचाई तक हटा देना चाहिए। बेहतर फल सेट और उपज के लिए, एक से अधिक किस्मों या पेड़ों का रोपण करने की सलाह दी जाती है।

खाद और उर्वरक

पौधों को सही पोषण देने के लिए गोबर की खाद, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश की सही मात्रा में आवश्यकता होती है। प्रत्येक पौधे को सालाना 25 किलोग्राम गोबर की खाद और 1.5 किलोग्राम नाइट्रोजन, 0.5 किलोग्राम फॉस्फोरस, और 0.5 किलोग्राम पोटाश देना चाहिए। यह मात्रा प्रति वर्ष धीरे–धीरे बढ़ाई जाती है। पोधों के रोपाई के एक वर्ष बाद 4 – 5 टोकरी गोबर की खाद , 2 – 3 कि.ग्रा. अरण्डी / करंज की खली एवं 50:25:25 ग्रा. एन.पी.के. प्रति वर्ष डालते रहना चाहिए।

यह मात्रा 10 वर्ष तक बढ़ाते रहना चाहिए तत्पश्चात 500: 250: 250 ग्रा. एन.पी.के. की मात्रा प्रत्येक वर्ष देना चाहिए। थ्ल्ड की पूरी खुराक और रासायनिक उर्वरकों की आधी मात्रा मानसून के मौसम की शुरुआत (अप्रैल–मई) में और शेष आधी मात्रा मानसून के अंत (अक्टूबर) में डालनी चाहिए। कमी के लक्षण दिखाई देने पर, ZnSO4 और FeSO4 / 0.5% का पत्तियों पर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

सिंचाई

गर्मियों में सप्ताह में एक बार सिंचाई करें। बरसात के मौसम में सिंचाई की जरुरत नहीं पड़ती है, लेकिन सर्दी के मौसम में 15 दिन पर सिंचाई करने से पौधों में फल तथा फूल अच्छे लगते है।

फलों की तुड़ाई

- चीकू के पौधे 3–4 वर्षों में फल देना शुरू करते हैं।
- फल पकने में 7 से 10 महीने का समय लगता है।
- जब फल हल्का भूरे रंग का हो जाता है और थोड़ा नरम हो जाता है, तब इसे तुड़ाई के लिए तैयार माना जाता है।
- तुड़ाई की विधि: फलों को हल्के हाथों से या कैंची से काटकर निकाला जाता है ताकि पौधे को कोई नुकसान न हो।

एक परिपक्व चीकू का पेड़ प्रति वर्ष 1000 से 1500 फल तक दे सकता है। प्रति हेक्टेयर 20–25 टन उपज प्राप्त हो सकती है।

आलूबुखारा के सामान्य रोग: लक्षण, रोग का प्रभाव और नियंत्रण के उपाय

आलूबुखारा की फसल में कई प्रकार के रोग लग सकते हैं, जो उत्पादन और गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। रोगों के कारण पौधों की वृद्धि और विकास रुक जाता है, जिससे फल की संख्या और आकार में कमी आती है। रोगों से किसान की कुल पैदावार में गिरावट होती है। इन प्रभावों से बचने के लिए आलूबुखारा की फसल में समय पर रोगों की पहचान, रोकथाम और प्रबंधन आवश्यक होता है। सही समय पर उचित कदम उठाने से नुकसान को कम किया जा सकता है और फसल की गुणवत्ता और उत्पादन को बनाए रखा जा सकता है। यहां हम आपको आलूबुखारा के कुछ सामान्य रोग, उनके लक्षणों और नियंत्रण के उपायों के बारे में जानकारी देंगे।

1. कैंकर रोग (Bacterial Canker: Pseudomonas syringae)

कैंकर संक्रमित कलियों के आधार पर तने और प्रमुख शाखाओं पर विकसित होते हैं। कैंकर संक्रमण के स्थान के ऊपर तेजी से फैलते हैं, जबकि नीचे कम फैलते हैं और केवल किनारों पर थोड़े से फैलते हैं। इसका परिणाम एक लंबा और संकरा कैंकर होता है। कैंकर गिरावट और सर्दियों के दौरान विकसित होते हैं, लेकिन देर से सर्दियों और शुरुआती वसंत तक दिखाई नहीं देते। क्षतिग्रस्त क्षेत्र थोड़े धंसे हुए और आसपास की छाल की तुलना में थोड़े गहरे रंग के होते हैं। जैसे ही पेड़ वसंत में निष्क्रियता से बाहर आता है, गोंद बनने लगता है और पेड़ के बाहर से नीचे की ओर बहता है। कैंकर से खट्टा सा गंध आती है। यह बैक्टी. रिया एक कमजोर रोगजनक है और केवल तब गंभीर क्षति पहुंचाता है जब पेड़ लगभग निष्क्रिय अवस्था में होता है या प्रतिकूल बढ़ती परिस्थितियों के कारण कमजोर हो जाता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- रोग की रोकथाम के लिए देर गर्मियों में उच्च मात्रा में खाद का उपयोग करने से बचें। नयी टहनियों, देर से होने वाली शरद ऋतु की वृद्धि अधिक आसानी से संक्रमित हो जाती है।
- पेड़ों की छंटाई तब करें जब वे पूरी तरह से निष्क्रिय अवस्था में हों (जनवरी और फरवरी में)।
- जो पेड़ बैक्टीरियल कैंकर के संकेत दिखा रहे हों, उन्हें आखिरी में छांटें, जब बाकी सभी पेड़ों की छंटाई पूरी हो जाए।
- जैविक फफूंदनाशकों का छिड़काव करें।
- संतुलित मात्रा में खाद का प्रयोग करें और देर से उगने वाले नाजुक पौधों को बचाएं।

2. भूरी सड़न रोग (Brown Rot: Monilinia fructicola)

आलूबुखारा भूरी सड़न का फफूंद (फंगस) फूलों की सूजन (ब्लॉसम ब्लाइट) या फलों की सड़न का कारण बन सकता है। सतही नमी और मध्यम गर्म तापमान इसके विकास को प्रोत्साहित करते हैं। हवा, ओलावृष्टि, कीटों या यांत्रिक क्षति से प्रभावित फल इस जीवाणु के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। संक्रमित फूल भूरे और पानी से भरे हुए दिखते हैं। यह फफूंद डंठल से तने तक फैलती है, जिससे शाखाएं सूख सकती हैं। रोगग्रस्त फूल और फल आमतौर पर भूरे फफूंदी के ष्गुच्छोंष से ढक जाते हैं। फलों का संक्रमण आमतौर पर परिपक्वता के पास होता है। यह फफूंद जीवाणु सर्दियों में ममीकृत फलों, तनों के कैंकर और पुराने फलों के डंठलों में जीवित रहता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- प्रभावित फल को तुरंत हटाएं और नष्ट करें।
- गीले मौसम में फल पर फफूंदनाशक छिड़कें।
- नियमित छंटाई करें ताकि पौधों में वायु संचार हो सके।

3. बैक्टीरियल स्पॉट (Xanthomonas campestris pv- Pruni)

इस रोग के लक्षण सबसे पहले छोटे, अनियमित आकार के धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। ये धब्बे हल्के हरे होते हैं, जो आसपास के गहरे हरे ऊतकों के विपरीत होते हैं। उन्नत चरणों में, कोणीय धब्बे बनते हैं, जो हल्के रंग के ऊतकों की एक आभा से घिरे होते हैं। घाव का आंतरिक हिस्सा काला हो जाता है और गिर जाता है, जिससे पत्ते को ष्फटा हुआष या ष्शॉट होलष जैसा रूप मिलता है। बैक्टीरियल स्पॉट से अत्यधिक संक्रमित पत्ते पीले हो जाते हैं और गिर जाते हैं। पत्तों के धब्बे मुख्य रूप से पत्तियों के सिरे की ओर केंद्रित होते हैं। फल संक्रमण, पत्तियों के संक्रमण की तुलना में कम होता है। जब यह होता है, तो छोटे धब्बे विकसित होते हैं और इन धब्बों से गोंद बह सकता है। अत्यधिक संवेदनशील किस्में जैसे मेथले और सांता रोजा में फल संक्रमण की संभावना अधिक होती है, जबकि मॉरिस, ब्रूस या ओजार्क प्रीमियर में यह कम होता है। यह बैक्टीरिया संक्रमित टहनियों में सर्दियों में जीवित रहता है।

रोग नियंत्रण के उपाय

- इस रोग के नियंत्रण में रासायनिक नियंत्रण अत्यधिक प्रभावी नहीं रहा है।
- प्रारंभिक और देर से निष्क्रिय अवस्था में कॉपर स्प्रे से नियंत्रण में सहायता मिलती है। उचित पोषण भी महत्वपूर्ण होता है।

Crops

Coromandel Fantac Plus

Flusilazole 12.5% + Carbendazim 25% SE

Vegetables Crops

Horticultural Crops

संतरा की सफल खेती के टिप्स: उपयुक्त मिट्टी, पौध चयन और सिंचाई के लिए पूरी गाइड

संतरा खट्टे फलों की श्रेणी में आता है, मीठा संतरा भी कहलाता है। माना जाता है कि संतरा मैंडरिन और पोमेलो का संकर प्रकार है। संतरे के पेड़ सबसे आम हैं और दुनिया भर में हर जगह पाए जाते हैं, चाहे वह उष्णकटि. बंधीय हो या उपोष्णकटिबंधीय हो। यह पेड़ जंगली नहीं होताय बल्कि, खट्टे फलों की दो अन्य किस्मों ने इसे पालतू बनाया गया है। इस लेख में आप इसकी खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी के बारे में जानेंगे।

संतरे की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

संतरे की खेती करते समय मिट्टी की उपरी और नीचे की सतह की संरचना और विशेषताओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। बगीचा लगाने से पहले मिट्टी की जांच करने से भविष्य में होने वाली समस्याओं का पता लगाया जा सकता है, जो उत्पादन और आयु को बढ़ा सकता है। संतरे लगभग सभी प्रकार की अच्छे जल निकास वाली जीवांश युक्त भूमि में लगाए जा सकते हैं, लेकिन गहरी दोमट मिट्टी सबसे अच्छी है। भूमि की गहराई दो मीटर होनी चाहिए।

मृदा का pH 4.5 से 7.5 के बीच अनुकूल रहता है। यह सफलतापूर्वक खेती के लिए मृदा कंकरीली कठोर और अवमृदा नहीं होनी चाहिए।

संतरे की खेती कहाँ होती है?

नागपुर संतरे की खेती के लिए भारत में मशहूर है। महा. राष्ट्र में लगभग 80% संतरा उगाया जाता है। लेकिन कई ऐसी उन्नत किस्में विकसित की जा चुकी हैं कि दूसरे राज्यों में संतरे की खेती भी संभव है। महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में संतरे की खेती की जाती है।

संतरे के पौध का चुनाव कैसे करें

संतरे के रोगमुक्त पौधे केवल संरक्षित पौधशाला से खरी. दने चाहिए। यह पौधे मफाइटोप्थारा फंफूद और विषाणु से सुरक्षित हैं। रंगपुर लाईम या जम्बेरी मूलवन्त के कलमे किये हुए पौधे लें। कल को रोगमुक्त, सीधा और लगभग 60 से.मी. की उचाई पर जमीन की सतह से 25 से.मी. की उचाई पर बढ़ाया जाना चाहिए। इन कलमो में भरपूर तन्तूमूल जड़े होना चाहिएय जमीन से निकालने में जड़े टूटने नहीं चाहिए और जड़ो पर कोई घाव नहीं होना चाहिए।

संतरे के पौधों को कैसे लगाए?

संतरे के पौधे को लगाने के लिए दो रेखांकन पदति होती हैंरू वर्गाकार और षटभुजाकार। षटभुजाकार पदति में वर्गाकार पदति की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक पौधे लगाये जा सकते हैं। गढढे का आकार 75 X 75 X 75 से.मी. होना चाहिए और 6 X 6 से.मी. की दूरी पर पौधे लगाना चाहिए। इसलिए एक हैक्टेयर में 277 पौधे लगाए जा सकते हैं। 300 से 400 पौधे हल्की भूमि में 5-5 X 5-5 मी० या 5 X 5 मी० के अंतर पर लगाए जा सकते हैं। गढढे भरने के लिए प्रत्येक गढढे में मिट्टी के साथ 20 किलो सडी हुई गोबर की खाद, 500 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 500 ग्राम नीम खली और 10 ग्राम कार्बेन्डाजिम का उपयोग करें।

संतरे की फसल में खाद प्रबंधन

गोबर की खाद, सुपर फास्फेट, म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा दिसम्बर–जनवरी में दें। यूरिया की 1/3 मात्रा फरवरी में फूल आने के पहले तथा शेष 1/3 मात्रा अप्रेल में फल बनने के बाद और शेष मात्रा अगस्त माह के अन्तिम सप्ताह में दे।

संतरा में फरवरी व जुलाई माह में गौण तत्वों का छिडकाव करना उचित रहता है। इसके लिये 550 ग्राम जिंक सल्फेट, 300 ग्राम कॉपर सल्फेट, 250 ग्राम मैंगनीज सल्फेट, 200 ग्राम मैग्नेशियम सल्फेट, 100 ग्राम बोरिक एसिड, 200 ग्राम फेरस सल्फेट व 900 ग्राम चूना लेकर 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।

संतरे की फसल में पानी कब दे?

अधिक सिचाई से अधिक उत्पादन की धारणा गलत है। पटपानी बगीचे को नुकसान पहुंचाता है। सिचाई को गर्मियों में चार से सात दिन और ठंड में दस से पंद्रह दिन के अंतराल पर ही करना चाहिए। पेड के तने पर सिंचाई का पानी नहीं लगना चाहिए। इसके लिए डबल रिंग सिंचाई पद्धति का उपयोग करें।

टपक सिंचाई एक अच्छा उपाय है क्योंकि इससे पानी की बचत 40 से 50 प्रतिशत तक होती है और खरपतवार की वृद्धि 40 से 65 प्रतिशत तक कम होती है। पेड बढ़ते हैं, फलों की गुणवत्ता अच्छी होती है, और मजदूरी बचती है।

Kewda Flower: कैसा होता है केवड़ा का फूल, उपयोग और इसकी खेती से संबंधी सम्पूर्ण जानकारी

केवड़ा का फूल अपनी मनमोहक सुगंध के लिए जाना जाता है। यह एक छोटा, सफेद और बाल जैसा दिखने वाला फूल होता है। फूल काफी छोटा होता है और इसकी लंबाई लगभग 2–3 इंच तक हो सकती है। ये फूल किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते है। इस लेख में आप केवड़ा के फूल के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करेंगे।

केवड़ा का फूल दिखने में कैसा होता है?

केवड़ा का फूल (Kewda Flower) दिखने में बहुत सुंदर और अनोखा होता है। यह सफेद, हल्के पीले या हल्के हरे रंग का होता है। फूलों की बनावट लंबी और बेलनाकार होती है, जो आमतौर पर कुछ इंच लंबी होती है। फूल के कई छोटे–छोटे तंतु होते हैं जो एक साथ जुड़े होते हैं। इसके पंखुड़ियां पतली, नुकीली और घनी होती हैं, जो एक शंकु के आकार में व्यवस्थित होती हैं। केवड़ा का फूल सुगंधित होता है और इसकी खुशबू बहुत ही मीठी और मनमोहक होती है।

केवड़ा के फूल का इस्तेमाल किसलिए किया जाता है?

- इसका उपयोग इत्र, पूजा, और कई अन्य धार्मिक और सांस्कृतिक अवसरों पर किया जाता है।
- केवड़े के पानी का उपयोग कई खाद्य पदार्थों जैसे मिठाइयों, कुल्फी और अन्य व्यंजनों में सुगंध के लिए किया जाता है।
- केवड़े के तेल का उपयोग आयुर्वेद में भी किया जाता है।

केवड़ा की खेती कैसी मिट्टी में की जाती है?

माना जाता है कि बलुअर दोमट मिट्टी और दोमट मिट्टी केवड़ा की खेती (Kewda Flower) के लिए काफी उपयुक्त होती हैं। इसकी फसल भी रेतीली, बंजर और दलदली मिट्टी में अच्छी होती है। इसकी पैदावार अच्छी होती है अगर जल निकासी की सुविधा अच्छी होती है।

केवड़ा की खेती कैसे की जाती है?

केवड़ा की रोपाई जुलाई और अगस्त में की जाती है, लेकिन सिंचाई की सुविधा हो तो इसे फरवरी–मार्च में भी उगाया जा सकता है।

- रोपाई से पहले खेत की अच्छी तरह जुताई कर लें और समतल कर दें। इसके बाद, पौधों को नर्सरी से लाकर पहले से तैयार किए गए गड्ढों में लगा दें।
- पौधों के बीच पर्याप्त दूरी बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है। शाम के समय में रोपाई करना लाभकारी होता है, क्योंकि तापमान कम होने से पौधों की बेहतर वृद्धि होती है।
- रोपाई के बाद नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर बारिश हो रही हो तो सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती।
- अगर बारिश नहीं हो रही है, तो हर 8–10 दिन पर खेत में पानी देना आवश्यक होता है।

केवड़ा के खेतों में आमतौर पर खरपतवार नहीं उगते, क्योंकि यह पौधा मजबूत होता है और निराई की जरूरत नहीं होती। रोपाई के समय जैविक खाद डालने से पौधों की वृद्धि अच्छी होती है और फूल बेहतर लगते हैं। पत्तियों में कीट लगने की संभावना होती है, जिसके लिए किसान समय पर कीटनाशक छिड़काव कर सकते हैं।

फूलों की तुड़ाई

- केवड़ा के फूलों (Kewda Flower) की तुड़ाई बहुत सावधानीपूर्वक की जाती है। फूल ताजे और पूरी तरह खिले होने चाहिए।
- तुड़ाई का समय आमतौर पर सुबह जल्दी या देर शाम होता है ताकि फूलों की खुशबू बनी रहे।
- एक बार तुड़ाई के बाद, फूलों को जल्दी से इत्र बनाने या अन्य उपयोगों के लिए भेजा जाता है, क्योंकि उनकी खुशबू जल्द ही कम हो जाती है।

ग्लेडियोलस फूल की खेती कैसे की जाती है और देखभाल के सर्वोत्तम तरीके

ग्लेडियोलस की खेती एक सजावटी फूल की उत्पादन प्रक्रिया है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से फूलों की सजावट और फूल उद्योग में किया जाता है। यह खेती आर्थिक रूप से फायदेमंद होती है और इसकी मांग बहुत अधिक होती है। ग्लैडियोलस की सुंदरता, विभिन्न रंगों और लंबे समय तक फूलदान में टिके रहने की क्षमता के कारण इसे उगाया जाता है।

ग्लैडियोलस की खेती का महत्व

ग्लैडियोलस का फूल बाजार में अत्यधिक मांग में होता है। इसका उपयोग शादियों, त्योहारों और अन्य समारोहों में सजावट के लिए किया जाता है। यह फूल लाल, सफेद, पीले, गुलाबी और बैंगनी जैसे कई रंगों में उपलब्ध है, जो इसे बागवानी में भी पसंदीदा बनाता है। इस फूल की खेती से किसान अच्छा लाभ कमा सकते हैं।

जलवायु और मिट्टी की आवश्यकताएं

ग्लैडियोलस की खेती के लिए ठंडी और समशीतोष्ण जलवायु की जरूरत होती है। इसे अच्छी धूप वाली जगह पर उगाया जा सकता है। 15 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान इसकी वृद्धि के लिए सबसे आदर्श होता है। बहुत ज्यादा गर्मी या ठंड इसके पौधों को नुकसान पहुंचा सकती है। अगर मिट्टी की बात की जाए, तो इसके लिए दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी में जल निकासी अच्छी होनी चाहिए क्योंकि पानी के ठहराव से कंद खराब हो सकते हैं।

मिट्टी का pH स्तर 6–7 के बीच होना चाहिए। खेती शुरू करने से पहले मिट्टी की जांच करना लाभकारी हो सकता है।

भूमि की तैयारी

ग्लैडियोलस की खेती के लिए भूमि को ठीक तरह से तैयार करना आवश्यक है। पहले खेत की गहरी जुताई करें जिससे मिट्टी नरम हो जाए। इसके बाद खेत में गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालकर मिट्टी में मिलाएं। खेत को समतल करें ताकि पानी सही ढंग से निकल सके।

बीज और कंद का चयन

ग्लैडियोलस की खेती में मुख्य रूप से कंदों (Corms) का उपयोग किया जाता है। कंदों को स्वस्थ और आकार में अच्छे चुनना आवश्यक है। सामान्यतः कंदों का आकार 2.5 से 4 से.मी. के बीच होना चाहिए। बुवाई से पहले कंदों को फफूंदनाशक घोल में 10 से 15 मिनट तक भिगोना चाहिए ताकि फफूंद का संक्रमण न हो।

बुवाई का समय

ग्लैडियोलस की बुवाई का सही समय वर्षा ऋतु के बाद, अर्थात सितंबर से नवंबर तक होता है। अगर आपके क्षेत्र में ठंड जल्दी आ जाती है, तो आप बुवाई जुलाई से सितंबर के बीच कर सकते हैं।

बुवाई की विधि

ग्लैडियोलस की बुवाई के लिए 5–7 से.मी. गहरे गड्ढे बनाए जाते हैं। कंदों को 10–15 से.मी. की दूरी पर लगाया जाता है। कंदों को सही दिशा में रखते हुए गड्ढों में डालें और हल्की मिट्टी से ढक दें।

सिंचाई

ग्लैडियोलस की खेती में नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है। बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करें। जब पौधे विकसित होने लगें, तो मिट्टी में नमी बनाए रखना जरूरी होता है। खासतौर पर गर्मियों में हर 7–10 दिनों में सिंचाई करनी चाहिए। फूल आने से पहले और बाद में अधिक पानी की आवश्यकता होती है।

खाद और उर्वरक

ग्लैडियोलस की फसल को बेहतर वृद्धि के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इसके लिए नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश (NPK) वाले उर्वरकों का उपयोग करें। बुवाई के समय गोबर की खाद या कम्पोस्ट डालें। फसल के विकास के दौरान उर्वरक का उपयोग करें, खासतौर पर जब पौधों में फूल आने शुरू हो जाएं।

निराई और गुड़ाई

ग्लैडियोलस की खेती में निराई और गुड़ाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। फसल के बीच उगने वाले खरपतवारों को समय–समय पर हटाना आवश्यक होता है क्योंकि वे पौधों से पोषक तत्व छीन लेते हैं। निराई और गुड़ाई से मिट्टी में नमी और हवा को बेहतर तरीके से संरक्षित किया जा सकता है।

कीट और रोग प्रबंधन

ग्लैडियोलस की फसल पर कई कीट और रोगों का हमला हो सकता है, जैसे कंद सड़न, ब्लाइट और एफिड्स। इनसे बचने के लिए नियमित जांच करें और सही समय पर कीटनाशक एवं फफूं. दनाशक का उपयोग करें। इसके अलावा, जैविक कीट नियंत्रण विधियों, जैसे नीम के तेल का उपयोग भी फायदेमंद हो सकता है।

फूलों की तुड़ाई

फूलों की तुड़ाई तब की जाती है जब पौधों पर 1–2 फूल खिल चुके होते हैं और शेष फूल कलियों में होते हैं। फूलों को सावधानी से काटें ताकि शेष पौधा सुरक्षित रहे और कंद खराब न हों। तुड़ाई के बाद फूलों को सीधे धूप से बचाकर छांव में रखना चाहिए जिससे वे लंबे समय तक ताजा रहें।

उपज

ग्लैडियोलस की खेती से अच्छी उपज प्राप्त हो सकती है। एक हेक्टेयर भूमि से लगभग 1,50,000 से 2,00,000 फूलों की उपज हो सकती है, जो खेती की विधि, जलवायु और प्रबंधन पर निर्भर करती है।

बाजार में बिक्री

ग्लैडियोलस के फूलों की बाजार में अच्छी मांग रहती है। इसे स्थानीय बाजारों के साथ–साथ बड़े शहरों में भी बेचा जा सकता है। शादियों, त्योहारों और अन्य समारोहों में इसकी अधिक मांग रहती है। ग्लैडियोलस की खेती किसानों के लिए लाभ. कारी हो सकती है। सही देखभाल और प्रबंधन के साथ किसान इससे अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। यह खेती किसानों के लिए आर्थिक रूप से सफल और स्थायी साबित हो सकती है।

mahindra
TRACTORS
TOUGH HARDUM

माइलेज शानदार, पावर दमदार

Mahindra
275DI TU
XP PLUS
29.1 kW (39 HP)

प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर: जानें इसके अनोखे फीचर्स और लाभ

प्रीत 987 फसल कंबाइन हार्वेस्टर को फसल कटाई के राजा के रूप में जाना जाता है। यह अपनी अद्वितीय प्रदर्शन, उच्च उत्पादकता और आसान सेवा क्षमताओं के लिए जाना जाता है। इस समय, प्रीत 987 नई सुविधाओं और विशेषताओं के साथ भारत का सबसे पसंदीदा और आदर्श कंबाइन हार्वेस्टर बन गया है। इस लेख में हम आपको इस कंबाइन हार्वेस्टर से संबंधित सभी जानकारी प्रदान करेंगे।

प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर की इंजन पावर?

- प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर एक शक्तिशाली 101 एचपी इंजन के साथ आता है।
- इसमें एक उच्च शक्ति वाला 6–सिलेंडर डीजल इंजन (110 पीएस / 2200 आरपीएम) होता है।
- इसमें एक बड़ा टॉर्क रिजर्व, सरल डिजाइन, कम रखरखाव लागत, उच्च ईंधन दक्षता और पर्यावरण अनुकूलता होती है।
- इसमें साफ अनाज को 2.52 मीटर क्षमता वाले अनाज टैंक में संग्रहित किया जाता है, जिससे अनलोड चक्र कम हो जाता है और प्रदर्शन की दक्षता बढ़ जाती है।
- प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर में 4 फॉरवर्ड और 1 रिवर्स गियर वाला गियरबॉक्स मिलता है। इसमें आपको एक हैवी ड्यूटी ड्राई क्लच भी मिल जाता है।

प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर के फीचर्स

- लचीले अवतल के साथ थ्रेशिंग सिस्टम सबसे जटिल क्षेत्र की स्थितियों में भी अनाज और भूसे को न्यूनतम क्षति के साथ प्रभावी रूप से अलग करने में सक्षम होता है।
- बेहतर थ्रेशिंग प्रणाली निरंतर और कोमल थ्रेशिंग सुनिश्चित करती है।
- स्वायत्त रीथ्रेसिंग इकाई के साथ बड़े पृथक्करण क्षेत्र वाले स्ट्रॉ वॉकर यह सुनिश्चित करते हैं कि फसलों की कटाई न्यूनतम नुकसान के साथ की जाए।
- यह फसल की कटाई 65 से 1275 से.मी. की ऊंचाई से कर सकता है। इसके कटर की चौड़ाई 14 फीट है, जिससे यह एक बार में 14 फीट तक का क्षेत्र कवर करता है।
- इसके फ्यूल टैंक की क्षमता 365 लीटर है, जो लंबे समय तक कार्य करने के लिए पर्याप्त होता है।

प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर से कर सकते है कई फसलों की कटाई

- यह मल्टीक्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर गेहूं, धान, सोया. बीन, सूरजमुखी और सरसों जैसी पारंपरिक अनाज फसलों की कटाई के लिए डिजाइन किया गया है।
- Merikheti के इस लेख में आपने प्रीत 987 स्टेलर कंबाइन हार्वेस्टर के बारे में जानकारी प्राप्त की। अगर आपके पास इस कंबाइन हार्वेस्टर से संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

लैंडफोर्स डिस्क हैरो हाइड्रोलिक–हैवी की संपूर्ण जानकारी

हर किसान को खेती करने के लिए हैरो की विशेष आवश्यकता होती है। इसलिए आज हम आपको Landforce Disc Harrow Hydraulic&Heavy हैरो के बारे में बताने जा रहे हैं, जो कि भारतीय कृषि बाजार में उपलब्ध समस्त नामचीन मॉडल्स में से एक है। Landforce Disc Harrow Hydraulic&Heavy एक बेहद शक्तिशाली हैरो है, जो अपनी उत्तम गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। Landforce Disc Harrow Hydraulic&Heavy हैरो की दमदार संरचना एवं नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल इसको लोकप्रिय और कृषि उत्पाद. कता में सकारात्मक बदलाव लाने वाला उपकरण बनाता है। यह किसानों को जटिल और समय लेने वाले कृषि कार्यों को सुगम बनाने तथा उन्हें सहजता और सुविधा के साथ करने में सहयोग करता है।

लैंडफोर्स डिस्क हैरो हाइड्रोलिक–हैवी इतना खास क्यों है?

लैंडफोर्स डिस्क हैरो हाइड्रोलिक–हैवी एक शक्तिशाली कृषि यंत्र है, जो कि समस्त ट्रैक्टरों के साथ सहजता से जुड़ जाता है। यह सभी प्रकार की भूमि के लिए काफी कारगर साबित होता है। साथ ही, कृषि उत्पादकता में भी काफी सुधार करता है। यह सभी प्रकार के खेतों, सब्जियों की फसलों, फलों के बागों और अंगूर के बागों के लिए पूर्णतय उचित है।

भारत मेंLandforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy की कीमत बेहद किफायती है। किसानों के प्रयास और समय को कम करके यह खेती को काफी आसान बना देता है।

भारतीय बाजार में लैंडफोर्स डिस्क हैरो हाइड्रोलिक–हैवी की कीमत क्या है?

स्ंदकवितबम Disc Harrow Hydraulic & Heavy की कीमतें बहुत किफायती हैं। भारत में बजट के तहत Landforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy अब तक सबसे अधिक पैसा बचाने वाला है और इसकी लगातार बढ़ती लोकप्रियता और ग्राहक–आधार इसका जीता जागता सबूत है। Landforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy के निर्माताओं ने सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले उत्पादों के उपयोग से लेकर अंततः मूल्य निर्धारण तक, किसानों की हर जरूरत के बारे में सोचा है। यह मूल्य सीमा भारतीय किसानों की खरीदने की क्षमता के हिसाब से बिल्कुल फिट बैठती है।

लैंडफोर्स डिस्क हैरो हाइड्रोलिक–हैवी के फीचर्स एवं विशेषताएं क्या हैं?

Landforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy हैरो 60 & 135 HP ट्रैक्टर के साथ कार्य करने वाला एक अद्भुत कृषि यंत्र है। यह किसानों की मूल आवश्यकताओं और मांगों को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है, जिससे कि वे कुशलतापूर्वक और परेशानी मुक्त ढ़ंग से कार्य कर सकें। Landforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy हैरो से कृषि क्षेत्र में काम करते समय स्थिर कार्यक्षमता प्रदान करने के लिए बेहतर गुणवत्ता हैं। भारत में Landforce Disc Harrow Hydraulic & Heavy से किसानों को खेतों पर कार्य करने में सुगमता होती है।

महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर: किसानो का विश्वसनीय साथी

महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर उत्पादकता और लाभ में सर्वश्रेष्ठ है। ईंधन दक्षता वाले इस 275 टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर में 39 एचपी ईएलएस डीआई इंजन और 145 एनएम टॉर्क है।इस लेख में आज हम आपको इस ट्रैक्टर सारे फीचर्स बताने जा रहे हैं।

महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर ट्रैक्टर की इंजन पावर

- 275 टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर में 39 एचपी का इंजन है।
- ट्रैक्टर के इंजन में तीन सिलिन्डर हैं।
- 2200 रेटेड आरपीएम पर ट्रैक्टर का इंजन काम करता है।
- इस ट्रैक्टर में 34 हॉर्स पीटीओ पावर है, जिससे सभी उपकरण चलना आसान होगा।

महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

- ट्रैक्टर आपको पार्शियल कॉन्स्टेंट मेश ट्रांसमिशन देता है।
- इस ट्रैक्टर में आठ फारवर्ड और दो रिवर्स गियर्स गिय. रबॉक्स हैं।
- ट्रैक्टर में दो तरीके के स्टीयरिंग दिए गए हैं – मैन्युअल स्टीयरिंग और ड्यूल एक्टिंग पावर स्टीयरिंग। आप अपने हिसाब से निर्धारित कर सकते हैं कि आपको कौन से स्टीयरिंग वाला ट्रैक्टर खरीदना हैं।
- महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर में 6-0 X 16 फ्रंट टायर और 12-4 X 28/13-6 X 28 पीछे के टायर हैं।
- ट्रैक्टर में तेल में डूबे ब्रेक आपको अधिक नियंत्रण देते हैं।
- यह ट्रैक्टर 1500 किलोग्राम हाइड्रोलिक उठाने की क्षमता से पहले से कहीं अधिक तेजी से काम कर सकता है और भारी भार को आसानी से संभाल सकता है।

महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर की कीमत

- यदि ट्रैक्टर की कीमत की बात की जाए तो इसकी कीमत 5.80 से 6.00 लाख रुपये है।
- ट्रैक्टर की कीमत में भी कई जगह थोड़ा अंतर देखने को मिलता है। ष्महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लसष ट्रैक्टर उद्योग में छह साल की वारंटी देने वाला पहला है ट्रैक्टर।
- महिंद्रा 275 डीआई टीयू एक्सपी प्लस ट्रैक्टर एक ऑलराउंडर है, जो आपकी सभी कृषि आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

सॉलिस YM 342A 4WD ट्रैक्टर: 42 HP पावर के साथ किसानों के लिए एक आदर्श विकल्प

किसान खेती के लिए विभिन्न कृषि उपकरणों का उपयोग करते हैं, जिनमें ट्रैक्टर की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यह किसानों को खेती के बड़े कार्यों को आसानी से करने में मदद करता है। अगर आप एक किसान हैं और एक शक्तिशाली और उन्नत ट्रैक्टर खरीदने की सोच रहे हैं, तो सॉलिस YM 342A 4WD एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।इस ट्रैक्टर का 2190 सीसी इंजन 42 HP पावर प्रदान करता है और यह 2500 आरपीएम पर काम करता है।

सॉलिस YM 342A 4WD ट्रैक्टर की इंजन पावर क्या है?

इस ट्रैक्टर में 2190 सीसी का चार–सिलेंडर वाटर–कूल्ड इंजन है, जो 42 HP पावर और 142.9 एनएम टॉर्क उत्पन्न करता है। इसमें ड्राई टाइप एयर फिल्टर होता है और इसका इंजन 2500 आरपीएम पर चलता है, जबकि इसकी पीटीओ पावर 36-12 HP है।

सॉलिस YM 342A 4WD ट्रैक्टर के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन

- इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग है और यह आठ आगे और आठ पीछे गियर के साथ आता है।
- इसमें डबल क्लच और Synchro & Reverser ट्रांसमिशन है।
- इसकी फॉरवर्ड स्पीड 29.29 किमी/घंटा है।
- इस ट्रैक्टर में तेल से भरे ब्रेक्स और स्वतंत्र पावर टेकऑफ सिस्टम है, जो 540 / 540E आरपीएम पर काम करता है।
- इसमें 8 X18 फ्रंट टायर और 13-6 X 28 रियर टायर के साथ 4WD ड्राइव है।
- इस ट्रैक्टर की ग्राउंड क्लीयरेंस 425 मिमी है और इसका वजन 1450 किलोग्राम है, जबकि इसकी कुल वजन क्षमता 1850 किलोग्राम है।
- ट्रैक्टर की लंबाई 3531 मि.मी., चौड़ाई 1618 मि.मी. और व्हीलबेस 1900 मि.मी. है।

सॉलिस YM 342A 4WD ट्रैक्टर की कीमत

इस ट्रैक्टर की एक्स–शोरूम कीमत भारत में लगभग 8.65 लाख रुपये है। इसकी ऑन–रोड कीमत राज्य के आरटी. ओ और टैक्स के आधार पर बदलती है। सॉलिस YM 342A 4WD ट्रैक्टर पर कंपनी द्वारा 5 साल की वारंटी दी गई है।

कुबोटा नियोस्टार B2441: आधुनिक सुविधाओं के साथ किसानों का पसंदीदा ट्रैक्टर

कुबोटा कंपनी किसानों के लिए नियमित रूप से ट्रैक्टर बनाती रहती है। इस कंपनी के ट्रैक्टर आधुनिक सुविधाओं से लैस होते हैं, और इसने किसानों के लिए बागवानी के काम के लिए ऐसा ट्रैक्टर बनाया है जिससे सभी कार्य सरलता से किए जा सकें। इस ट्रैक्टर का नाम कुबोटा नियोस्टार B2441 है, जिसमें 24 HP का शक्तिशाली इंजन और आधुनिक सुविधाएँ होती हैं। इस लेख में आप इस ट्रैक्टर की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे।

कुबोटा नियोस्टार B2441 का इंजन पावर

- कुबोटा नियोस्टार B2441 में कुबोटा कंपनी ने एक दमदार इंजन दिया है।
- इस ट्रैक्टर में 24 HP का ताकतवर इंजन मिलता है।
- इस ट्रैक्टर का इंजन 1123 CC की क्यूबिक क्षमता का है और यह 2600 रेटेड RPM पर बेहतरीन प्रदर्शन करता है।
- इस ट्रैक्टर में लिक्विड कूल्ड कूलिंग सिस्टम उपलब्ध है।
- ट्रैक्टर के इंजन में ड्राई टाइप एयर फिल्टर और 3 सिलेंडर हैं।

कुबोटा नियोस्टार B2441 फीचर्स

- ट्रांसमिशन की बात करें तो, इस ट्रैक्टर में ड्राई सिंगल प्लेट ट्रांसमिशन मिलता है।
- इसके गियरबॉक्स में 9 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर्स मिलते हैं।
- इस ट्रैक्टर की फॉरवर्ड स्पीड भी बेहतरीन है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 1-00 & 19-8 kmph है, जिससे ट्रैक्टर को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता है।
- इस ट्रैक्टर में आयल इम्मरसेड ब्रेक्स दिए गए हैं जिससे इसे नियंत्रित किया जा सके।
- इस ट्रैक्टर में मैनुअल स्टीयरिंग है।
- हाइड्रोलिक कंट्रोल सिस्टम की बात करें तो, इसमें पोजीशन कंट्रोल और सुपर ड्राफ्ट कंट्रोल वाला हाइड्रोलिक सिस्टम मिलता है।
- इस ट्रैक्टर में कंपनी ने कैटेगरी 1 और 1N थ्री–पॉइंट हिच प्रदान किया है।
- इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 750 किलोग्राम है, जिससे भारी सामान उठाना आसान हो जाता है।
- ट्रैक्टर में 7-0 X 12 के फ्रंट टायर और 8-30 X 20-0 के रियर टायर हैं, जो किसी भी मिट्टी में आसानी से काम कर सकते हैं।

कुबोटा नियोस्टार B2441 ट्रैक्टर की कीमत कितनी है?

कुबोटा नियोस्टार B2441 ट्रैक्टर की कीमत लगभग 5.78 लाख रुपये है, जो जगह के हिसाब से थोड़ी अलग हो सकती है। इस ट्रैक्टर की कीमत किसानों के बजट और इसमें उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार तय की गई है। Merikheti पर आपको हमेशा सही जानकारी मिलती है। यदि आप कुबोटा कंपनी के सभी ट्रैक्टर मॉडल्स की विस्तृत जानकारी चाहते हैं, तो आप Merikheti पर जा सकते हैं।

SONALIKA
LEADING AGRI EVOLUTION

आधुनिक टेक्नोलॉजी बेमिसाल ताक़त

SONALIKA TIGER DI 65 4WD

सबसे बड़ा
CRDS इंजन
4712 CC

इंजन
65 HP पॉवर
55 HP ईंधन माइलेज

ट्रेम स्टेज-IV

मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर: 50 HP की ताकत और उन्नत फीचर्स के साथ किसान की पहली पसंद

मैसी फर्ग्यूसन 9500 एक 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसे कंपनी ने एक शक्तिशाली इंजन के साथ तैयार किया है। यह ट्रैक्टर विशेष रूप से किसानों की खेती को सरल बनाने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे भारी कार्यों में समय की बचत और सुगमता होती है। कंपनी ने इस ट्रैक्टर में कई नवीन फीचर्स जोड़े हैं, जो इसे अन्य ट्रैक्टरों से अलग बनाते हैं। यदि आपको भारी उपकरणों को खींचने या परिवहन करने के लिए ट्रैक्टर की आवश्यकता है, तो मैसी फर्ग्यूसन 9500 आपके लिए एक उत्कृष्ट विकल्प हो सकता है।

मैसी फर्ग्यूसन 9500 की प्रमुख विशेषताएं क्या हैं?

इस ट्रैक्टर की अद्भुत विशेषताएं इसे उन किसानों के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती हैं जो अपनी खेती को उन्नत करना चाहते हैं और अपने कृषि व्यवसाय में बड़ी सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। यह ट्रैक्टर खेती का जादूगर है, जो आपके कृषि कार्यों को सरल बना देगा। 50 hp श्रेणी की शक्ति वाले एक कुशल और उच्च गुणवत्ता वाले इंजन से लैस, यह आधुनिक तकनीक से सुसज्जित ट्रैक्टर किसानों के लिए एक परफेक्ट साथी है।

इंजन और ईंधन क्षमता कैसी है?

- मैसी फर्ग्यूसन 9500 में 3 सिलेंडरों वाला शक्तिशाली इंजन है, जो 2700 cc उत्पन्न करता है। यह इंजन अत्यंत ईंधन कुशल है, जो बड़े किसानों को लागत प्रभावी संचालन प्रदान करता है।
- ड्राई क्लीनर एयर फिल्टर के साथ, इंजन धूल–मुक्त रहता है, जिससे यह सुचारू और कुशलता से काम करता है।
- इंजन को ठंडा रखने के लिए इसमें नैचुरली एस्पिरेटेड वाटर कूल्ड सिस्टम दिया गया है।
- इस ट्रैक्टर में बड़ी ईंधन टैंक क्षमता है, जिससे यह बिना किसी रुकावट के लंबे समय तक काम कर सकता है।
- साथ ही इसमें उन्नत विशेषताएं हैं, जो सुनिश्चित करती हैं कि ट्रैक्टर सुचारू और प्रभावी ढंग से काम करे, जिससे समय और प्रयास की बचत होती है।

ट्रांसमिशन

- मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर में Comfimesh MESH ट्रांसमिशन दिया गया है।
- साइड शिफ्ट गियरबॉक्स होने से चालक को गियर बदलने में आसानी होती है।
- इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गति के गियरबॉक्स प्रदान किए गए हैं।
- अधिक गति विकल्प होने से ट्रैक्टर कम समय में अधिक क्षेत्र को कवर करता है, जिससे किसान के समय की बचत होती है।
- उन्नत ट्रांसमिशन सिस्टम ट्रैक्टर को सुचारू और आसान संचालन में सक्षम बनाता है।

पीटीओ पावर

- मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर का पीटीओ 43.5 HP है, जो किसानों को एक सहज और कुशल खेती का अनुभव कराता है।
- इसका उन्नत पीटीओ सिस्टम और आसान हैंडलिंग इसे किसी भी किसान के बेड़े के लिए एक विश्वसनीय और मूल्यवान जोड़ बनाते हैं।

स्टीयरिंग और ब्रेक प्रकार कैसे हैं?

- इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग दिया गया है, जिससे चालक को ट्रैक्टर चलाने में मजा आता है।
- पावर स्टीयरिंग से ट्रैक्टर कम जगह में भी आसानी से घूम जाता है, और सड़क पर नियंत्रण आसान हो जाता है।
- खेत में काम करते समय भी ट्रैक्टर संभालना आसान होता है।
- तेल में डूबे हुए ब्रेक होने से ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों (जैसे ढलानों, चिकनी जगहों और सड़क पर) को पार करने में मदद मिलती है।

टायर्स

- मैसी फर्ग्यूसन 9500 के टायर्स खुली जगहों, जंगली क्षेत्रों और मैला मैदान में स्थिरता और कर्षण प्रदान करते हैं।
- इन टायर्स में विशेष ट्रेड डिजाइन होता है, जो मिट्टी के संघनन को कम करता है और कर्षण को बढ़ाता है।

हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी

- इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 2050 किलोग्राम है। अधिक लिफ्टिंग क्षमता होने से यह भारी से भारी वजन को भी आसानी से उठा सकता है।
- उपकरणों को संचालित करने के लिए इसमें सटीक हाइड्रोलिक्स दिया गया है।
- नई तकनीक के सेंसिंग पॉइंट्स के साथ, यह ट्रैक्टर उन्नत लिफ्टिंग सिस्टम प्रदान करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

मैसी फर्ग्यूसन 9500 एक शक्तिशाली 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसकी कीमत 9.70–10.18 लाख रुपये तक है। बड़े किसानों और ढुलाई के कार्यों के लिए यह ट्रैक्टर बहुत उत्तम है। इसकी कीमत इसके फीचर्स और भारतीय किसानों के बजट के आधार पर तय की गई है। merikheti के इस लेख में आपने मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर के बारे में जाना। यदि आपके पास इससे संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

स्टीयरिंग और ब्रेक प्रकार कैसे हैं?

- इस ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग दिया गया है, जिससे चालक को ट्रैक्टर चलाने में मजा आता है।
- पावर स्टीयरिंग से ट्रैक्टर कम जगह में भी आसानी से घूम जाता है, और सड़क पर नियंत्रण आसान हो जाता है।
- खेत में काम करते समय भी ट्रैक्टर संभालना आसान होता है।
- तेल में डूबे हुए ब्रेक होने से ट्रैक्टर कठिन परिस्थितियों (जैसे ढलानों, चिकनी जगहों और सड़क पर) को पार करने में मदद मिलती है।

टायर्स

- मैसी फर्ग्यूसन 9500 के टायर्स खुली जगहों, जंगली क्षेत्रों और मैला मैदान में स्थिरता और कर्षण प्रदान करते हैं।
- इन टायर्स में विशेष ट्रेड डिजाइन होता है, जो मिट्टी के संघनन को कम करता है और कर्षण को बढ़ाता है।

हाइड्रोलिक्स लिफ्टिंग कैपेसिटी

- इस ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 2050 किलोग्राम है। अधिक लिफ्टिंग क्षमता होने से यह भारी से भारी वजन को भी आसानी से उठा सकता है।
- उपकरणों को संचालित करने के लिए इसमें सटीक हाइड्रोलिक्स दिया गया है।
- नई तकनीक के सेंसिंग पॉइंट्स के साथ, यह ट्रैक्टर उन्नत लिफ्टिंग सिस्टम प्रदान करता है।

मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर की कीमत क्या है?

मैसी फर्ग्यूसन 9500 एक शक्तिशाली 50 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिसकी कीमत 9.70–10.18 लाख रुपये तक है। बड़े किसानों और ढुलाई के कार्यों के लिए यह ट्रैक्टर बहुत उत्तम है। इसकी कीमत इसके फीचर्स और भारतीय किसानों के बजट के आधार पर तय की गई है। merikheti के इस लेख में आपने मैसी फर्ग्यूसन 9500 ट्रैक्टर के बारे में जाना। यदि आपके पास इससे संबंधित कोई और प्रश्न हैं, तो आप हमसे संपर्क कर सकते हैं।

प्रीत 9094 ट्रैक्टर आता है अद्वितीय प्रदर्शन और उच्च उत्पादकता क्षमता के साथ

किसान भाइयों, प्रीत 9094 & 4WD ट्रैक्टर का उद्देश्य कृषि कार्यों जैसे खेती, जुताई, बुवाई और कटाई को उच्च प्रदर्शन के साथ पूरा करना है। यह ट्रैक्टर सांप्रदायिक सेवाओं और वानिकी में उपयोग के लिए संशोधित किया जा सकता है और अन्य ट्रैक्टरों की तुलना में अधिक व्यापक क्षमताओं की पुष्टि करता है। इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के कृषि कार्यों, विशेषकर जुताई वाली फसलों की अंतर–पंक्ति खेती में किया जा सकता है। इस लेख में आप इस ट्रैक्टर की सभी विशेषताओं के बारे में जानेंगे।

प्रीत 9094 & 4WD के इंजन की शक्ति

- प्रीत 9094 & 4WD ट्रैक्टर में 90 एचपी का इंजन है, जिसमें 4 सिलेंडर और 4087 सीसी की क्यूबिक कैपेसिटी है।
- यह 2200 रेटेड आरपीएम उत्पन्न करता है।
- इसमें मल्टी सिलेंडर इनलाइन (BOSCH) फ्यूल पंप और ड्राई टाइप एयर फिल्टर है।
- ट्रैक्टर को मेटैलिक पेंट से आकर्षक बनाया गया है और यह पेंट लंबे समय तक खराब नहीं होता।
- ट्रैक्टर के आगे हलोजन हेड लैंप वाली लाइट दी गई है।

प्रीत 9094 – 4WD के फीचर्स

- इस ट्रैक्टर में डबल एक्टिंग पावर स्टीयरिंग है।
- इसमें 12 फॉरवर्ड और 12 रिवर्स गियरबॉक्स मिलते हैं।
- ट्रांसमिशन के लिए इसमें SYNCHROMESH ट्रांसमिशन है और साइड शिफ्ट गियरबॉक्स होने से सीट के आगे अच्छा स्पेस मिलता है।
- ट्रैक्टर में तेल में डूबे हुए DISC ब्रेक्स दिए गए हैं। ब्रेक के पेडल्स आरामदायक हैं और इन्हें आसानी से दबाया जा सकता है।
- ट्रैक्टर में दाहिनी ओर पोजीशन कंट्रोल और ड्राफ्ट कंट्रोल के लिए दो लीवर हैं। आप इसे कल्टीवेटर या अन्य उपकरणों के उपयोग के समय आसानी से एडजस्ट कर सकते हैं।
- ट्रैक्टर की लिफ्टिंग क्षमता 2400 किलोग्राम है और यह TPL category–पप के साथ लिंकेज पॉइंट्स प्रदान करता है। हाइड्रोलिक ट्यूब को जोड़ने के लिए इसमें 2 वाल्व हैं।
- इस ट्रैक्टर में PTO स्पीड 540 आरपीएम और 1000 आरपीएम है, साथ ही रिवर्स च्ज्ब् भी उपलब्ध है। PTO की पावर 42 एचपी है।
- ट्रैक्टर के टायरों की बात करें तो सामने के टायर 12-4 X 24 और पीछे के टायर 18-4 X 30 हैं। इसका कुल वजन 2800 किलोग्राम है।
- इस ट्रैक्टर में फ्यूल टैंक की क्षमता 67 लीटर है, जिससे आप खेत में लंबे समय तक बिना रुकावट के काम कर सकते हैं।

प्रीत 9094 & 4WD की कीमत

भारत में इस ट्रैक्टर की कीमत 16-50&17-20 लाख रुपये तक हो सकती है। यह कीमत विभिन्न स्थानों पर थोड़ी भिन्न हो सकती है। प्रीत 9094 & 4WD की कीमत भारतीय किसानों के बजट के अनुसार निर्धारित की गई है।

Coromandel
FUTURE POSITIVE

Ab sab Fit hai!

GROMOR FITSOL™

Complete nutrition with just 2 Fertigation grades

बारिश के मौसम में पशुओं का ध्यान कैसे रखें, इसके बारे में पशु पालन विभाग द्वारा दी गयी सलाह

पशुधन प्रबंधन भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो किसानों की आय और आजीविका में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। पशुओं की बेहतर सेहत, उचित पोषण, और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की रोकथाम के लिए सही सलाह और प्रबंधन अत्यंत आवश्यक हैं। पशुओं की देखभाल में उनके चारे, शेड प्रबंधन, बीमारियों की रोकथाम, और प्रजनन संबंधी पहलुओं का ध्यान रखना जरूरी होता है। इस सलाह का उद्देश्य पशुपालकों को उनके पशुओं की उत्पादकता और सेहत सुधारने में मदद करने के लिए आवश्यक जानकारी और दिशा–निर्देश प्रदान करना है, ताकि वे उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद प्राप्त कर सकें और अपने पशुधन को स्वस्थ बनाए रख सकें

बारिश के मौसम में पशुओं का ध्यान कैसे रखें

बारिश के मौसम में पशुओं का ध्यान रखने के उपाय निम्न. लिखित दिए गए है:

- शेड के अंदर नमी जमा न होने दें और इसे रोकने के लिए दिन के समय शेड की खिड़कियों को खोलें। इससे धूप अंदर आएगी और शेड में वेंटिलेशन होगा, जिससे श्वसन रोगों की संभावना को रोका जा सकेगा।
- शेड के अंदर की फर्श ईंटों की होनी चाहिए ताकि इसे आसानी से साफ किया जा सके।
- कच्ची फर्श की ऊपरी मिट्टी की परत को नियमित अंतराल पर बदलते रहना चाहिए। इससे फर्श और नालियां सूखी रहेंगी और शेड से अवांछित गंध भी दूर होगी।
- गर्मी, आर्द्रता, बारिश और चारे की कमी के कारण पशुओं के लिए यह तनाव का समय होता है। पशुओं को वैकल्पिक आहार प्रदान करें, जैसे गेहूं के भूसे या साइलो के साथ मिश्रित संकेंद्रित आहार।
- जब भी पशु पर या शेड के अंदर कोई दवा का उपयोग किया जाए, तो कुछ सावधानियां बरतनी आवश्यक होती हैं। जहां भी पशु की त्वचा पर कोई घाव हो, वहां टिक–मारक दवा का उपयोग नहीं करना चाहिए। माइट्स आमतौर पर गर्दन की सिल. वटों, थनों के आसपास और पूंछ के नीचे छिपते हैं, इसलिए इन स्थानों पर सावधानीपूर्वक दवा लगानी चाहिए।
- जब भी शेड में छिड़काव किया जाए, तो चारा रखने वाली मचानों को ढक देना चाहिए और यदि संभव हो तो पशुओं को कुछ समय के लिए शेड से बाहर निकाल देना चाहिए ताकि वे दवा को चाट न सकें।

अर्जुन की खेती: पशुओं के लिए पौष्टिक चारा और अतिरिक्त आय का स्रोत

अर्जुन का पेड़ अपनी औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इसकी छाल का उपयोग कई बीमारियों के इलाज में किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि अर्जुन का पेड़ पशुओं के लिए भी एक बेहतरीन चारा हो सकता है? आइए जानते हैं अर्जुन की खेती कैसे की जाती है और यह पशुओं के लिए कैसे फायदेमंद है।

जलवायु और मिट्टी की आवश्यकताएं

जलवायु

अर्जुन की खेती के लिए उपोष्णकटिबंधीय और उष्णक. टिबंधीय जलवायु सबसे उपयुक्त है। यह वृक्ष 10°C से 45°C के बीच तापमान सहन कर सकता है, और 800–1200 मि.मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से विकसित होता है।

मिट्टी

यह विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है, लेकिन दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी का pH स्तर 6.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए। अर्जुन की जड़ें गहरी होती हैं, इसलिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी इसकी वृद्धि के लिए अनुकूल होती है।

भूमि की तैयारी

खेत की गहरी जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बना लें ताकि पौधे की जड़ें आसानी से फैल सकें। खेत की आखिरी जुताई के बाद, गोबर की सड़ी हुई खाद डालें जिससे मिट्टी में पोषक तत्वों की आपूर्ति हो सके। खेत को समतल करें ताकि पौधे की सिंचाई सही तरीके से हो सके।

अर्जुन के पेड़ लगाने का तरीका

- **बीज से:** अर्जुन के बीजों को पानी में भिगोकर रखें और फिर उन्हें नर्सरी में बोएं। जब पौधे कुछ बड़े हो जाएं तो उन्हें मुख्य खेत में लगाएं।
- **पौध से:** आप नर्सरी से तैयार पौधे भी खरीद सकते हैं और उन्हें सीधे खेत में लगा सकते हैं।

अर्जुन के पौधों को बीजों से तैयार किया जा सकता है, लेकिन कलम विधि से पौधों की वृद्धि अधिक होती है। पौधों को लगाने का सबसे अच्छा समय मानसून का मौसम है, जब मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है। पौधों की रोपाई करते समय 5 X 5 मीटर की दूरी रखी जाती है। एक हेक्टेयर में लगभग 400–450 पौधे लगाए जा सकते हैं।

अर्जुन के पेड़ की देखभाल

- **सिंचाई:** शुरुआती कुछ महीनों में नियमित रूप से पानी दें। बाद में, यह पेड़ सूखे का सामना कर सकता है।
- **खाद:** समय–समय पर खाद देते रहें।
- **निराई–गुड़ाई:** खरपतवारों को समय–समय पर हटाते रहें।
- **छंटाई:** पेड़ को आकार देने के लिए समय–समय पर इसकी छंटाई करते रहें।

अर्जुन के पत्ते पशुओं के लिए उत्तम चारा क्यों हैं?

- **पौष्टिक तत्व:** अर्जुन के पत्तों में प्रोटीन, विटामिन और खनिज पदार्थ भरपूर मात्रा में होते हैं।
- **पाचन में आसानी:** पशु इन पत्तों को आसानी से पचा सकते हैं।
- **रोग प्रतिरोधक क्षमता:** अर्जुन के पत्ते पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।
- **दूध उत्पादन:** अर्जुन के पत्ते दूध देने वाले पशुओं में दूध उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

अर्जुन के पत्तों को पशुओं को कैसे खिलाएं?

- **ताजे पत्ते:** आप ताजे पत्ते सीधे पशुओं को खिला सकते हैं।
- **सूखे पत्ते:** आप पत्तों को सुखाकर भी स्टोर कर सकते हैं और सर्दियों में पशुओं को खिला सकते हैं।
- **चारे के मिश्रण में:** आप अर्जुन के पत्तों को अन्य चारे के साथ मिलाकर पशुओं को खिला सकते हैं।

अर्जुन की खेती के फायदे

- **आर्थिक लाभ:** अर्जुन की लकड़ी, छाल और पत्ते बाजार में अच्छी कीमत पर बिकते हैं।
- **पर्यावरणीय लाभ:** अर्जुन का पेड़ मिट्टी को उपजाऊ बनाता है और पर्यावरण को शुद्ध करता है।
- **पशुओं के लिए लाभ:** अर्जुन के पत्ते पशुओं के लिए एक स्वस्थ और पौष्टिक चारा है।
- अर्जुन की छाल का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में किया जाता है। इसलिए, यदि आप छाल का उपयोग करना चाहते हैं तो किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह लें।
- अर्जुन की खेती एक लाभदायक और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प है। यदि आप किसान हैं या पशुओं का पालन करते हैं, तो आप अर्जुन की खेती करके अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं और अपने पशुओं को स्वस्थ रख सकते हैं।

ताकत, किफायत और भरोसे के साथ
प्रीत सुपर ही है
सबसे ऊपर
PREET
SUPER
9049 4WD
PREET
PREET
#BetterFutureIsHere

सतावर की खेती: कम लागत में ज्यादा मुनाफा कैसे कमाएं?

सतावर एक औषधीय पौधा है जो सिद्धा और होम्योपैथिक चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। भारत में विभिन्न औषधीय उत्पादों को बनाने के लिए हर साल 500 टन सतावर की जड़ों की आवश्यकता होती है। एक एकड़ में 2 से 3 क्विंटल सतावर उत्पादन होता है। अभी बाजार में इसकी कीमत 50,000 रुपये से 1 लाख रुपये तक है। इसलिए प्रति एकड़ कीमत 1.5 लाख से 3 लाख रुपये तक हो सकती है।

सतावर का उपयोग किसलिए किया जाता है?

सतावर (Shatavari) एक आयुर्वेदिक औषधि है जिसका उपयोग कई प्रकार की शारीरिक समस्याओं के उपचार में किया जाता है। इसके कुछ प्रमुख उपयोग निम्नलिखित हैं:

- **महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार:** सतावर का उपयोग प्रजनन स्वास्थ्य को सुधारने के लिए किया जाता है। यह हार्मोन संतुलन बनाए रखने और महिलाओं की प्रजनन प्रणाली को सशक्त करने में मदद करता है।
- **इम्यून सिस्टम को मजबूत करना:** यह इम्यूनिटी को बढ़ाने में मदद करता है और शरीर को बीमारियों से लड़ने के लिए अधिक सक्षम बनाता है।
- **पाचन तंत्र में सुधार:** सतावर को पाचन संबंधी समस्याओं जैसे एसिडिटी, पेट दर्द और गैस से राहत देने के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।
- **एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण:** इसमें सूजन और दर्द को कम करने वाले गुण होते हैं, जिससे यह जोड़ों के दर्द और सूजन के इलाज में भी सहायक है।
- **तनाव और चिंता में राहत:** सतावर का उपयोग मानसिक शांति देने और तनाव और चिंता को कम करने के लिए किया जाता है। यह मन को शांति प्रदान करता है।
- **स्तनपान में सहायक:** यह नवजात शिशुओं की माताओं के लिए दूध उत्पादन बढ़ाने में मदद करता है।

खेती के लिए जलवायु और मिट्टी की आवश्यकता

सतावर उष्णकटिबंधीय और उप–उष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी तरह से उगता है। इसे गर्म और आर्द्र क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। अधिकतम 35–40 डिग्री सेल्सियस तापमान इसके लिए उपयुक्त होता है।

भूमि: हल्की दोमट मिट्टी, जिसमें जल निकासी की अच्छी व्यवस्था हो, सतावर की खेती के लिए आदर्श होती है। मिट्टी का चभ स्तर 6–8 के बीच होना चाहिए।

भूमि की तैयारी

खेत को गहरी जुताई करके तैयार किया जाता है ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए। इसके बाद मिट्टी को समतल कर लें और 10–12 टन गोबर की खाद या जैविक खाद प्रति हेक्टेयर में डालें। सतावर की जड़ें जमीन के नीचे फैलती हैं, इसलिए मिट्टी का अच्छी तरह से तैयार होना आवश्यक है।

बीज या जड़ की तैयारी

सतावर की खेती बीजों या जड़कों (ट्यूबर्स) से की जा सकती है। बीजों से पौधे उगाने के लिए बीजों को पहले 24 घंटे तक पानी में भिगोकर रखें। जड़ों से खेती करने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली जड़कों का चयन करें और उन्हें सीधे खेत में लगाएं।

बुवाई का समय

सतावर की बुवाई का सही समय जून से जुलाई तक का होता है, जब मानसून शुरू होता है।

बीजों को लगभग 2–3 सेंटीमीटर गहराई पर बोया जाता है और जड़ों को 10–12 सेंटीमीटर गहराई पर रोपा जाता है।

रोपण की कितनी दुरी रखें?

पौधों के बीच की दूरी लगभग 30–45 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। कतारों के बीच की दूरी 60 सेंटीमीटर होनी चाहिए ताकि पौधों को फैलने के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके।

सिंचाई

मानसून के मौसम में सतावर को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन शुष्क मौसम में सिंचाई की आवश्यकता होती है। प्रति सप्ताह एक बार हल्की सिंचाई पर्याप्त होती है। जड़ों में पानी जमा न होने दें क्योंकि इससे सड़ने का खतरा हो सकता है।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार को समय–समय पर हटाना आवश्यक है ताकि पौधों को पोषक तत्व मिल सकें। हाथ से निराई या यांत्रिक उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

खाद और उर्वरक

जैविक खाद जैसे वर्मीकम्पोस्ट या गोबर की खाद का उपयोग करें। 2–3 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद का उपयोग फायदेमंद होता है। रासाय. निक उर्वरकों का कम से कम उपयोग करें और जैविक तरीकों से पोषक तत्वों की आपूर्ति करें।

कटाई

सतावर की जड़ें 18–24 महीने बाद तैयार हो जाती हैं। जब पौधा सूखने लगता है, तब जड़ों को खोदकर निकाल लिया जाता है। जड़ें निक. ालने के बाद उन्हें साफ करके धूप में सुखाया जाता है और फिर बाजार में बेचा जाता है। सतावर की औसत उपज लगभग 3–4 टन प्रति हेक्टेयर होती है, जो जड़ों की गुणवत्ता और खेती की पद्धति पर निर्भर करती है। सतावर की खेती में शुरुआती निवेश थोड़ा अधिक हो सकता है, लेकिन सही तरीके से खेती करने पर यह काफी लाभकारी फसल हो सकती है।

Semal Tree (सेमल का पेड़): सजावट से लेकर औषधीय उपयोग तक, सब कुछ जानें

सेमल का पेड़ (बॉम्बेक्स सीइबा), जिसे रेशम कपास भी कहा जाता है, भारत में एक बड़ा और तेजी से बढ़ने वाला पेड़ है। यह पेड़ अपने सजावटी महत्व के कारण कीमती माना जाता है और अक्सर पार्कों और बगीचों में लगाया जाता है। यह अपने विशिष्ट, कांटेदार लाल फूलों और फुलझड़ी जैसे बीज फली के लिए जाना जाता है, जिसमें कपास जैसा पदार्थ होता है जिसे पहले तकिए और गद्दे भरने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। यहां आप इस पेड़ के बारे में विस्तार से जानेंगे।

सेमल का पेड़ कैसा होता है?

सेमल को रेशम कपास के पेड़ के नाम से भी जाना जाता है। इसका वानस्पतिक नाम बॉम्बैक्स सीइबा है जो की एक पर्णपाती वृक्ष है। इसके अन्य कई नाम भी है जैसे कि लाल रेशम–कपास, लाल कपास का पेड़, या अस्पष्ट रूप से रेशम–कपास, मालाबार रेशम–कपास का पेड़, अथवा कपोक (Kapok) आदि। सेमल एक एशियाई उष्णकटिबंधीय पेड़ है। ये अपने सीधे और ऊँचे तने के लिए जाना जाता है। सर्दी के मौसम में इसकी पत्तियाँ झड़ जाती हैं। वसंत ऋतू में इस पेड़ पर लाल फूल खिलते हैं, जिनमें से प्रत्येक में पाँच पंखुड़ियाँ होती हैं।

रेशम कपास के पेड़ को सजावटी मूल्य के अलावा औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है। पारंपरिक चिकित्सा में पेड़ की छाल, पत्तियों और बीजों का उपयोग बुखार, दस्त और त्वचा की समस्याओं को ठीक करने के लिए किया जाता है। पेड़ भी घावों और कटने के लिए प्राकृतिक उपचार हैं।

किस प्रकार की जलवायु और मिट्टी में उगता है सेमल का पेड़

अपने प्राकृतिक आवास में, रेशम कपास का पेड़ आमतौर पर नदियों और नालों के किनारे उगता है और यह उष्णक. टिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु के लिए अनुकूल होता है। पेड़ विशेष रूप से ठंढ का सामना करने में सक्षम नहीं है और लंबे समय तक ठंडे तापमान में रहने से नुकसान पहुंच सकता है।

मिट्टी: सेमल के पेड़ के लिए अच्छी जल निकासी वाली, उपजाऊ और हल्की दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है। पानी की रुकावट वाले स्थानों से बचें क्योंकि इससे जड़ें सड़ सकती हैं।

सेमल के पेड़ को कैसे उगाया जाता है?

- **स्थान का चयन:** सेमल के पेड़ को पूरी धूप और अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की जरूरत होती है। ऐसे निचले इलाकों में इसे लगाने से बचें जहां ठंड के कारण पाला पड़ सकता है।
- **पेड़ खरीदें:** आप सेमल का पेड़ नर्सरी से या ऑनलाइन खरीद सकते हैं। ऐसी किस्म चुनें जो आपके क्षेत्र की जलवायु के लिए उपयुक्त हो।
- **पेड़ लगाएं:** पेड़ लगाते समय, जड़ों के लिए एक चौड़ा और गहरा गड्ढा खोदें। पेड़ को गड्ढे में रखें और मिट्टी से भरें, किसी भी हवा की जेब को निकालने के लिए मिट्टी को हल्के से दबाएं। पेड़ लगाने के बाद अच्छी तरह से पानी दें।

सेमल का पेड़ किसलिए इस्तेमाल किया जाता है

इस पेड़ का इस्तेमाल निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है –

- **औषधीय गुण:** पारंपरिक चिकित्सा में सेमल के पेड़ की छाल, पत्तियों और बीजों का उपयोग बुखार, दस्त और त्वचा की समस्याओं को ठीक करने के लिए किया जाता है। पेड़ भी घावों और कटने की चोट पर लगाने के लिए प्राकृतिक उपचार हैं।
- **इमारती लकड़ी:** निर्माण, फर्नीचर बनाने और अन्य लकड़ी के कामों में सेमल के पेड़ की लकड़ी अक्सर प्रयोग की जाती है क्योंकि यह ठोस और टिकाऊ है।
- इसकी आकर्षक उपस्थिति और तेजी से विकास दर के कारण, सेमल के पेड़ को अक्सर सड़क के पेड़ के रूप में या पार्क और बगीचे की परियोजनाओं में लगाया जाता है।
- सेमल का पेड़ फाइबर का एक बड़ा स्रोत है। कपास जैसा पदार्थ आमतौर पर तकिए को भरने के लिए प्रयोग किया जाता है।

वर्मी कंपोस्ट ने बदली इस किसान की तकदीर, 50 लाख कमा रहा मुनाफा जाने इसकी कहानी

उत्तर प्रदेश का महाराजगंज जिला कृषि उत्पादन में प्रसिद्ध है। किसानों का मानना है कि यहां की उपजाऊ भूमि सबसे अच्छी है। जिले के ज्यादातर लोग कृषि से प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। इनमें से कुछ किसान कृषि में कुछ अलग काम करने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। एक ऐसे ही प्रगतिशील किसान है नागेंद्र पांडेय जी, जो केंचुआ पालन करते हैं। नागेंद्र के आसपास और दूर–दूर से लोग वर्मी कंपोस्ट खरीदते हैं। नागेंद्र का कहना है कि उन्होंने ये काम छोटे स्तर से शुरू किया था लेकिन आज वे इस कार्य से लाखों का मुनाफा कमा रहे है।

नागेंद्र पांडेय ने बताई खुद की कहानी

महाराजगंज जिले के नंदना गांव निवासी नागेंद्र पांडेय ने बताया कि वर्मी कंपोस्ट का काम सिर्फ चालीस केंचुए से शुरू हुआ था। शुरू में उनको कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ा था। नागेंद्र पांडेय धीरे–धीरे इसे बढ़ाकर बड़े स्तर तक पहुँचाया। वर्तमान में 400 से अधिक बेड बनाने और काफी बड़े वर्मी कंपोस्ट बनाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि 40 केंचुए (10 रूपए) से 50 लाख तक की कीमत का सेटअप बनाया गया है। 50 से 60 दिनों में तैयार होने वाले वर्मी कंपोस्ट उनके लिए काफी मुनाफे वाला काम है।

नागेंद्र पांडेय के वर्मी कंपोस्ट प्लांट से बहुत से लोगो को रोजगार भी मिला है

नागेंद्र पांडेय ने बताया कि वर्मी कंपोस्ट में भी बहुत से लोग काम कर रहे हैं। 25 से 30 महिलाएं दैनिक रूप से प्लांट में काम करती हैं। इसके अतिरिक्त, पंद्रह लड़के वर्मी कंपोस्ट के लिए गोबर ढुलाई करते हैं। यह भी वर्मी कंपोस्ट बनाने के लिए गोबर लाने वाले लोगों को रोजगार देता है। यही कारण है कि नागेंद्र पांडेय अपने उद्यम के साथ–साथ लोगों को रोजगार के अवसर भी दे रहे हैं।

BHARAT CERTIS®
AGRISCIENCE LTD
A Group Company of Mitsui & Co., Ltd., Japan

हिमाराया

मिटाए खरपतवारों का साया
कपास के चौड़ी पत्ती खरपतवारों का उत्तम समाधान

MERI KHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010